

## ॥ श्री गायत्रीजी की आरती ॥

जय गायत्री माता आरती गायत्री माता की सबसे प्रसिद्ध आरती में से एक है।

यह प्रसिद्ध आरती माता माता से सम्बन्धित अधिकांश अवसरों पर गायी जाती है।

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।  
सत् मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता ॥

जयति जय गायत्री माता...।

आदि शक्ति तुम अलख निरञ्जनजग पालन करीं।  
दुःख, शोक, भय, क्लेश, कलह दारिद्र्य दैन्य हरीं ॥

जयति जय गायत्री माता...।

ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगतधातृ अम्बे। भवभयहारी,  
जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे ॥

जयति जय गायत्री माता...।

भयहारिणि भवतारिणि अनघे, अज आनन्द राशी। अविकारी, अघहरी,  
अविचलित, अमले, अविनाशी ॥

जयति जय गायत्री माता...।

काधमेनु सत् चित् आनन्दा, जय गंगा गीता। सविता की शाश्वती शक्ति, तुम  
सावित्री सीता ॥

जयति जय गायत्री माता...।

ऋग, यजु, साम, अथर्व, प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे। कृ पडलिनी  
सहस्रार, सुषुम्ना, शोभा गुण गरिमे ॥

जयति जय गायत्री माता...।

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्मणी, राधा, रुद्राणी। जय सतरुपा, वाणी,  
विद्या, कमला, कल्याणी ॥

जयति जय गायत्री माता...।

जननी हम है, दीन, हीन, दुःख, दरिद्र के घेरे। यदपि कुटिल, कपटी  
कपूत, तऊ बालक है तेरे ॥

जयति जय गायत्री माता...।

स्नेहसनी करुणामयि माता, चरण शरण दीजे। बिलख रहे हम शिशु सुत  
तेरे, दया दृष्टि कीजे ॥

जयति जय गायत्री माता...।

काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये। शुद्ध बुद्धि, निष्पाप  
हृदय, मन को पवित्र करिये ॥

जयति जय गायत्री माता...।

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तृष्टि, पुष्टि त्राता।  
सत् मार्ग पर हमे चलाओ, जो है सुखदाता ॥

जयसत जय गायत्री माता...।

॥ श्री गायत्रीजी की आरती ॥

आरती श्री गायत्रीजी की गायत्री माता की एक और लोकप्रिय आरती है।

यह प्रसिद्ध आरती माता माता से सम्बन्धित अधिकांश अवसरों पर गायी जाती है।

आरती श्री गायत्रीजी की।

ज्ञानदीप और श्रद्धा की बाती।  
सो भक्ति ही पूर्ति करे जहं घी की॥

आरती श्री गायत्रीजी की।

मानस की शुद्धि थाल केऊपर। देवी की ज्योत  
जगे, जहं नीकी॥

आरती श्री गायत्रीजी की।

शुद्ध मनोरथ ते जहां घण्टा। बाजें करै आसुह ही  
की॥

आरती श्री गायत्रीजी की।

जाके समक्ष हमें तिहुं लोक कै। गद्दी मिलै सबहुं लगै  
फीकी॥

आरती श्री गायत्रीजी की। संकट आवैं न पास कबौ  
तिन्हें।

सम्पदा और सुख की बनै लीकी॥ आरती श्री  
गायत्रीजी की।

आरती प्रेम सौ नेम सो करि। ध्यावहिं मूरति ब्रह्म  
लली की॥

आरती श्री गायत्रीजी की।